हिंदी में महिला पत्रकारिता

डॉ. पूनम चौहान
अलवर (राजस्थान)

ARTICLE DETAILS

Article History
Received: 09 April 2016
Accepted: 11 April 2016
Published Online: 21 April 2016

Keywords
पत्रकारिता, विविधता, अमोघ अस्त्र, ''शुभ–दृष्टि'', ''समदृष्टि'', ''सत्यं–शिवं–सुन्दरम्'', रहस्योद्घाटन, व्यवस्थापरकता, उत्तरदायित्व, निष्पक्षता, वैश्विक क्षितिज, यथार्थपरक प्रस्तुतीकरण, मातृशक्ति, महिलापत्रकारिता, समाचार

ABSTRACT

पत्रकारिता का अंग्रेजी शाब्दिक अर्थ जर्नलिज्म होता है, जो जर्नल शब्द से बनता है, जिसका मतलब दैनिक होता है। इससे स्पष्ट है कि दिन–प्रतिदिन की घटनाओं को सूचना के रूप में संकलित कर उसे पाठक के समक्ष संप्रेक्षित करने की कला एवं विज्ञान पत्रकारिता है अर्थात् विभिन्न स्त्रोतों से समाचारों एवं छाया चित्रों का संकलन, पाठकों की रूचियों के अनुरूप समाचारों का संपादन, ज्वलंत मुद्दों पर संपादकीय विचार एवं आलेख से पाठकों का दिशा–दर्शन तथा पत्र का कलेवर नयनाभिराम बनाना, ये सब समय पर पाठक के समक्ष प्रस्तुत कर ना ही पत्रकारिता है। पाठकों की रूचियाँ एवं दिशा–दर्शन में ही लक्ष्य का भावपूरा निहित है और इस लक्ष्य को पुरूष अथवा महिला पत्रकार पूरा करते है।
जर्नल को व्यापकता प्रदान करने वाला शब्द जर्नलिज्म बहुआयामी हैं लेखन, सम्पादन, संकलन तथा इन से सम्बद्ध आकाशवाणी, दूरदर्शन, वीडियो, फिल्म इत्यादि मीडिया भी इस के अन्तर्गत आते हैं। विभिन्न विद्वानों ने पत्रकारिता की भिन्न–भिन्नपरिभाषाएँ दी है।

सामयिकज्ञान के व्यवसाय को पत्रकारिता कहते हैं। इस व्यवसाय में आवश्यक तथ्यों की प्राप्ति, सजगता पूर्वक उनका मूल्यांकन तथा सम्यक् प्रस्तुति होती है।–सी.जी.मूलर

''कला, वृत्ति और जन–सेवा ही पत्रकारिता है।'' – डब्ल्यू.टी.स्टीड
''प्रकाशन, सम्पादन, लेखन अथवा प्रसारण सहित समाचार माध्यम के संचालन के व्यवसाय को पत्रकारिता कहते हैं।'' – न्यू वेवस्टर शब्दकोष
''पत्रकारिता पाँचवा वेद है, जिसके द्वारा ज्ञान–विज्ञान संबंधी बातों को जानकर अपने बन्द मस्तिष्क को खोलते हैं।''– इन्द्र विद्यावाचस्पति

शोध विस्तार –

पत्रकारिता एक ऐसा सशक्त माध्यम है जो हमारे जीवन की विविधताओं, नित्य नूतनताओं और दैनिक घटनावलियों–प्रसंगावलियों को शीघ्र प्रस्तुत करने की अतुल क्षमता रखता है। बीसवीं शताब्दी का जीवन जितना घटनाबहुल और वैचित्रय–विरोधमूलक है, उसे सही रूप से प्रस्तुत, पुनर्प्रस्तुत और समासित करने के लिए पत्रकारिता एक अमोघ अस्त्र भी है और जीवन माध्यम भी। वस्तुतः यही वह माध्यम है जिसके अन्तर्गत हम विश्व–जीवन से संयुक्त होते है। आज के सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक व्यवस्था प्रधान जीवन में समाचार पत्र हमारे जीवन का अभिन्न अंग बन चला है। जिस तरह शारीरिक भूख शान्त करने के लिए भोजन जरूरी है उसी तरह मानसिक तृप्ति के लिए पत्र पत्रिकाएँ जीवन के लिए अनिवार्य बन चले है।

डॉ. अर्जुन तिवारी का कहना है, ''समय और समाज के संदर्भ में सजग रहकर नागरिकों में दायित्व बोध कराने की कला को पत्रकारिता कहते हैं। गीता में जगह–जगह ''शुभ–दृष्टि'' का प्रयोग है। यह शुभ दृष्टि ही पत्रकारिता है, जिसमें गुणों को परखना तथा मंगलकारी तत्वों को प्रकाश में लाना सम्मिलित है। महात्मा गाँधी तो इसमें ''समदृष्टि'' को महत्त्व देते थे। समाज हित में सम्यक् प्रकाशन को पत्रकारिता कहा जा सकता है। असत्य, अशिव और असुन्दर पर ''सत्यं शिवं सुन्दरम्'' की शंख ध्वनि ही पत्रकारिता है।''[1]

''पत्रकारिता एक समसामयिक इतिहास है, जो शीघ्रतापूर्वक लिखा जाता है। अपने समय का लिखा गया इतिहास ही पत्रकारिता का महत्तम सन्दर्भ है। दैनिक क्रम में घटने वाली घटनाओं को चाहे वह घटना राजनैतिक हो, सांस्कृतिक और चाहे आर्थिक हो, रहस्योद्घाटन ही पत्रकारिता का जीवन है। पत्रकारिता का मूल ध्येय अन्याय का उद्घाटन करना, दोष–परिहार करना, सलाह देना, असहायों की सहायता करना और मित्र–विहीन लोगों को मित्रवत मार्ग दिखाना है।''[2]

''मॉर्डन जर्नलिज्म' में 'कर्ल. जी.मुगलर ने पत्रकारिता को इस प्रकार परिभाषित किया है कि पत्रकारिता तात्कालिक घटनाओं के सूक्ष्म विश्लेषण पर आधारित ज्ञान का कार्य है। ऐसा कार्य जिसमें आवश्यक तथ्यों को प्राप्त करने, उनकी महत्ता ने अनुसार ही उसे तैयार करना अर्थात् उत्पन्न स्थितियों के अनुसार तात्कालिक घटनाओं को बुद्धिमता से जनजीवन के सन्मुख प्रस्तुत करना पड़ता है।''[3]

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

''पत्रकारिता दैनिक जीवन की घटनाओं और उनके आधार पर प्रकाशित पत्रों की संवाहिका होती है। इसमें घटनाओं, तथ्यों, व्यवस्थापरकता के साथ–साथ राजनैतिक, सामाजिक, धार्मिक और कलात्मक संदर्भों की प्रस्तुति होती है।''[4]

प्रेमनाथ चतुर्वेदी का भी यही मत है कि ''पत्रकारिता विशिष्ट देशकाल, परिस्थितिगत, तथ्यों को अमूर्त, परोक्ष मूल्यों के संदर्भ और आलोक उपस्थित करती है।''[5] प्रत्येक साहित्यकार प्रथमतः पत्रकार ही हुए हैं बाद में उत्कृष्ट साहित्यकार। पत्रकारिता ही इनकी पहली सीढ़ी रही है। साहित्य की जन्मदात्री पत्र–पत्रिकाएँ ही रही है।

''पत्रकारिता वास्तव में एक चुनौती है जिसके आवश्यक गुण हैं – उत्तरदायित्व, अपनी स्वतंत्रता बनाए रखना, सभी दबावों से परे रहना, सत्य प्रकट करना, निष्पक्षता, समान और सभ्य व्यवहार।''[6]

'पत्रकारिता वह माध्यम है जिसके द्वारा हम अपने मस्तिष्क में दुनियाँ के बारे में समस्त सूचनाएँ संकलित करते हैं, जिसे हम स्वतः कभी नहीं जान सकते।''[7]

''पत्रकारिता समाज में जो कुछ भी अच्छा या बुरा घटित होता है उसका विश्लेषण करती हुई समाज की भविष्यदृष्टा बन जाती है।''[8]

मैत्रेयी, गार्गी, विद्योत्मा, लक्ष्मीबाई, दुर्गावती के भारत में भी इनका महत्व कम नहीं था। जब आदिकाल से ही मातृशक्ति को सोचने, समझने, कहने और कुछ कर गुजरने के अवसर मिलते रहे हैं, फिर आज की नारी कहाँ चुप रहने वाली थी। आज नारी ने महिला पत्रकार के रूप में भी समाज को दिशा देने का बीड़ा उठाया है और महत्वपूर्ण ये है कि वे इस कार्य को बखूबी निभा भी रहीं है। आज महिला पत्रकार अपनी योग्यता और क्षमता का उपयोग समाज और राष्ट्र विकास में कर रहीं है। जहाँ सरोजनी नायडू, मदर टेरेसा, डॉ. शुभलक्ष्मी, अमृता प्रीतम, पी.टी.उषा जैसी नारियाँ वे हस्ताक्षर हैं जो विकास पथ में 'मील के पथर' सिद्ध हुई हैं, वहीं महिला पत्रकारों ने भी अपने कलम का जादूई असर समाज पर छोड़ा है और नयी दिशाओं, नए आयामों में, सुनहरे कल की विकास यात्रा को निरन्तर आगे बढ़ा रहीं हैं।

विश्व की आबादी का आधा भाग महिलाओं का वह भाग है, जो मानव जीवन की विकास–यात्रा को एक नया दिशा बोध तथा एक नये आसमां तक ले जाता है। हमारे देश में महिलाओं की स्थिति विरोधाभास में से गुजरती हुई दिखाई देती है। लेकिन महिलाओं ने अपने अन्तर्मन की शक्ति को एकत्रित कर समाज में अपना अस्तित्व कायम कर पाने एवं स्वयं की एक उज्ज्वल छवि हेतु जो प्रशंसनीय कार्य किये है वे सभी कार्य किसी वर्णन के मोहताज नहीं है और इन सभी कार्यों को करने में उसका सबसे अधिक साथ निभाया है– उसके लेखन ने जो कि पत्रकारिता के माध्यम से मुखर हुआ।

''जो सफर बसमतिया से भँवरी बाई तक ने बीस वर्षों में तय किया, उससे भी बड़ा और दुरूह सफर वह है, जो हमारी महिला पत्रकारों, लेखिकाओं ने तय किया है मीरा बाई से लेकर मणिमाला तक।''[9] ''जिस समाज में जनगणना–दर–जनगणना औरतों व बच्चियों की तादाद लगातार घट रही हो, जहाँ निरोधी कानूनों के बावजूद दहेज उत्पीड़न जारी हो, कन्या भ्रूणों की हत्या की जा रही हो, वहाँ एक स्त्री के लिए न सिर्फ अपने अस्तित्व को कायम रखना वरन् देश के कोने–कोने में घट रहे सकारात्मक और नकारात्मक बदलावों को लेखन एवं पत्रकारिता की मुख्य धारा में दर्ज कराते चलता, कुदरत के महानतम् अचम्भों में से एक माना जाना चाहिए।''[10]

इन महिला पत्रकारों ने समाज व साहित्य की दिशा में जो उल्लेखनीय कार्य कर समाज की बहती धारा में अपना योगदान किया है। फलस्वरूप न केवल महिला समाज में वरन् पुरूष समाज में भी उत्थान हेतु अपनी प्रतिभा के परचम फहराए है। प्रस्तुत शोध में उसी योगदान को जन साधारण के समक्ष उजागर करने तथा समाज में इन्हें एक प्रेरणादायी संदेश के रूप में उभारने का प्रयास किया गया है।

महिला पत्रकारिता मानवीय गुणों को विकसित करती हुई उसकी अन्तर्दृष्टि पर पड़े आवरण को चीरकर ज्ञानलोक में ले जाती है और निर्भीकता, साहस के साथ स्वतंत्र निर्णय की क्षमता को विकसित करती है। परिणामतः मनुष्य के लिए उपयुक्त दिशा–पथ को चुनने में मददगार साबित हो रही है। महिला पत्रकारिता समाज में लोक–शिक्षण व लोक–जागृति का सशक्त साधन है और उसमें आदर्शोन्मुख दृष्टिकोण है। इन महिला पत्रकारों का यह कार्य विशुद्ध सेवावृत्ति ''**मिशन**'' कार्य है। जो राष्ट्रीय चरित्र एवं अनुशासन, पारस्परिक सौहार्द तथा देश की भावात्मक एकता को सुदृढ़ एवं परिपुष्ट बनाने के लिए स्वस्थ वातावरण का सृजन कर रहा है।

पुरूष प्रधान समाज में महिलाओं के लिए यह एक अत्यन्त दुरूह कार्य था। सर्वप्रथम महिला पत्रकारिता के माध्यम से समाज में महिलाओं ने अपनी योग्यता एवं सक्षमता सिद्ध की है तथा शनैः–शनैः उसने पुरूष प्रधान समाज में अपनी लेखनी का जो प्रभाव कायम किया है वह निश्चित ही प्रशंसनीय है। शनैः–शनैः यह विकास उत्तरोत्तर प्रगति के मार्ग पर अग्रसर है। साहित्य का चहुँमुखी विकास करने में महिला पत्रकार आज संघर्षरत है तथा प्रतिस्पर्धा के युग में महिला पत्रकारिता का प्रत्येक कदम भावी पीढ़ी के लिए निश्चित ही मील का पत्थर साबित होगा।

© RRIJM 2015, All Rights Reserved

वर्तमान हिन्दी महिला पत्रकारिता के क्षेत्र मे अनेक महिला पत्रकारों के नाम दर्ज है। जिनमें अनामिका, अन्नू आनन्द, अमिता जोशी, अरूणा सिंह, अर्चना सिंह वर्मा, अलका आर्य, इरा झा, उषा पाहवा, उषा महाजन, गीता श्री, जयन्ती, नीलम गुप्ता, पद्मा सचदेव, पारूल शर्मा, मंजरी चतुर्वेदी, मणिमाला, मनीषा, मीना कौशिक, मृणाल पाण्डे, मृदुला गर्ग, रजनी नागपाल, रजनी माथुर, रश्मि स्वरूप जौहरी, विमल इस्सर, शुचिता मित्तल, संतोष मेहता, सरोजनी बर्तवाल, सुषमा जगमोहन, सुषमा वर्मा, क्षमा शर्मा, आशा पटेल, अनु अग्रवाल, अमृता मौर्य, कमलेश माथुर, सुनीता चतुर्वेदी, मंजूला सक्सेना, साधना सोलंकी, जीनत कैंफी, ममता जैतली, नीलम मुंजाल, अर्पणा चतुर्वेदी, संगीता शर्मा, मधु बैनर्जी, मधुलिका, सुमन जैन, चंपा शर्मा, पद्मजा मेहता, सुमन शर्मा, शिवानी माथुर आदि अनेक है जिन्होंने समसामयिक परिवेश के सुधार में एक स्तम्भ का कार्य किया है तथा परिवेश के शरीर एवं उसके अन्तःकरण को निरूपित किया है। विद्रोह, आक्रोश एवं आलोचना के माध्यमों को स्वीकार करते हुए स्वस्थ सामाजिक मूल्यों की प्रतिस्थापना की है।

इस प्रकार चाहे कोई ग्रामीण परिवेश की बात हो, आतंकवाद की हो, स्त्री व बच्चों के भविष्य की हो, समाज के भेदभाव की हो, समाज में तिरोहित होते जा रहे है नैतिक मूल्यों की हो, जनप्रतिनिधियों की हो, बढ़ती आकांक्षाओं की हो, जीवन के तनाव की हो, समय की गति की हो, हत्या की हो, घरेलू हिंसा की हो, पाकिस्तान की हो, चुनावों की हो, शब्दों की सुन्दरता की हो – प्रत्येक विषय पर इन्होंनें राष्ट्र व समाज की गति के साथ–साथ चलने का प्रयास किया है। इसके अतिरिक्त सेहत का प्रश्न हो, चाहे आत्मीय क्षणों की संवेदना जैसा सूक्ष्म विषय हो, नारी के शोषण की यात्रा हो, चाहे महिला सशक्तिकरण की, भूकम्प का कहर हो या बच्चों के मूल्य की, शहरी जन–जीवन का विषय हो या आधुनिकीकरण का नशाबन्दी अभियान हो या आरक्षण का मुद्दा–इन्होनें अपनी संहिता से देश व समाज में निश्चित ही परिवर्तन किया है तथा आदर्श राज्य के निर्माण में महत्वपूर्ण भूमिका अदा की है, जिसे नकारा नहीं जा सकता।

निष्कर्ष – अतः जब से महिला पत्रकारों ने इस क्षेत्र के पदार्पण किया है तब से वे सिर्फ सूचनाओं का प्रसार ही नहीं, अपितू लोक शिक्षण का कार्य भी कर रहीं है। वे जनता को शिक्षित और सुसंस्कृत करने के सक्षम साधन के रूप में उभरी हैं। आज महिला पत्रकार सांस्कृतिक मूल्यों को जीवित रखते हुए उन्हें विरासत के रूप में अगली पीढ़ी तक पहुँचाने में भी अहम भूमिका निभाती हैं।

सन्दर्भ ग्रन्थ –

[1] पत्रकारिता के अनुभव–श्री इन्द्र विद्यावाचस्पति, पृ. 82

[2] आधुनिक पत्रकारिता–अर्जुन तिवाड़ी, पृ. 9

[3] डेन्जरस स्टेट : विलियम्सः पृ. 7

[4] कर्ल. जी. मुगलर :मॉडर्न जर्नलिज्म, पृ. 9

[5] अमेरिकन एनसाइक्लोपिडिया

[6] प्रिंसिपल आफ जर्नलिज्म, सी.एम. पोस्ट, पृ. 161–164

[7] हर्बर्ट ब्रूकर : फ्रीडम ऑफ इन्फारमेशन, पृ. 4

[8] डॉ. सुशीला जोशी, 'हिन्दी पत्रकारिता विकास और विविध आयाम', पृ. 5

[9] शब्दों का हरसिंगार–पद्मा सचदेव, पृ. 7

[10] वीरता कोई खुशबू नहीं है–अलका आर्य, पृ. 32

© RRIJM 2015, All Rights Reserved